Vol 6 Issue 3 April 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 3 | April - 2016

Indian Streams Research Journal

'चाक' उपन्यास नारी विद्रोह का स्वर

सुमन
सहायक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग ,
डी. ए. वी. कॉलेज अबोहर (पंजाब, भारत)

सुमन

सारांश :-
समकालीन हिन्दी उपन्यासों में विशिष्ट विषय, विशिष्ट समाज अथवा विशिष्ट वर्ग को विमर्श केन्द्र में रखते हुए सशक्त लेखन हुआ है। श्रेष्ठ साहित्य वही होता है जो अपने भीतर बाहर सार्वभौमिक सन्देशों, मूल्यों तथा उद्देश्यों को समाहित किये रखता है क्योंकि साहित्य समाज का दपर्ण होता है तथा वह सार्वकालिक, सार्वदेशिक एवं सार्वभौमिक होता है।'चाक' उपन्यास का प्रारम्भ जिस कथा से शुरू हुआ था वह कथा निश्चित ही स्त्री विमर्श की महनीयता की कथा थी। वहां एक स्त्री की हत्या के विरोध में दूसरी स्त्री तनकर खडी थी। यहो रेश्म और सारंग नहीं थी, दोनों बहनों का रिश्ता ही नहीं था बल्कि एक स्त्री का दूसरी स्त्री के प्रति आत्मीय संबंध था जो हत्या का बदला लेने के लिए तैयार करता है।'चाक' में मैत्रेयी जी ने जीवन की उन समस्याओं को रेखांकित किया है जो गहन वास्तविकता के साथ भावनाओं के सहज उच्छलन, मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का शमन करके संवेदनात्मक धरातल का संस्पर्श करती है।

बीज शब्दः– विमर्श, चाक, मैत्रेयी, उत्पीड़न, सारंग, विद्रोह, संकल्पना

मूल प्रतिपादनः–

स्त्रियों के उत्पीड़न और दासता का इतिहास उतना ही पुराना है जितना असमानता और उत्पीड़न पर आधारित सामाजिक सरंचनाओं के उद्भाव और विकास का इतिहास। प्राचीन साहित्य में अनेकों मिथक और कथाएँ मौजुद है जो पुरूष स्वामीत्व की सामाजिक स्थिति के विरूद्ध स्त्रियों के प्रतिरोध और विद्रोह का साक्ष्य प्रस्तुत करती है।

सदियों से होते आए शोषण तथा दमन के प्रति स्त्री चेतना ने ही नारी विमर्श को जन्म दिया है। विमर्श मूलक विचार से तात्पर्य उन विचारो से है जो समाज के किसी विशिष्ट वर्ग या विशिष्ट विषय से संबधित है।(1) समकालीन हिन्दी उपन्यासो में विशिष्ट विषय, विशिष्ट समाज अथवा विशिष्ट वर्ग को विमर्श केन्द्र में रखते हुए सशक्त लेखन हुआ है। 1960 के बाद ही मुख्यतः विमर्श केन्द्रित लेखन दृष्टिगोचर होता है। साहित्य के सन्दर्भ में 'विमर्श' संकल्पना आधुनिक युग की देन है। विमर्श शब्द मूलतः विचार विनिमय तथा चितंन मनन, गहन सोच–विचार, विवेचन को द्योतित करते है।(2) भोला नाथ तिवारी के अनुसार विमर्श का अर्थ है– तबादला–ए–ख्याल, परामर्श, मशविरा, शय बात, विचार–विनिमय, विचार विमर्श, सोच–विचार वस्तुतः कारगर ढ़ग से सोचकर वस्तुनिष्ठ तथा तर्क सगंत विवेचन एवं अलोचना करना ही विमर्श करना है।(3)

श्रेष्ठ साहित्य वही होता है जो अपने भीतर बाहर सार्वभौमिक सन्देशों, मूल्यों तथा उद्देश्यों को समाहित किये रखता है क्योंकि साहित्य समाज का दपर्ण होता है तथा वह सार्वकालिक, सार्वदेशिक एवं सार्वभौमिक होता है। साहित्यकार अपने युगीन वातावरण से पूर्णतः प्रभावित रहता है। वह अपने व्यक्तिगत अनुभवों का लेखन के द्वारा सामाजिक बनाता है अर्थात एक सच्चा साहित्यकार अपनी वैयक्तिकता को पिघला कर उसे समाजीकृत रूप में प्रस्तुत करता है। वैयक्तिकता को निर्वैयक्तिकता में परिवर्तित करना ही कलाकार की कला है जो पाठकों को मंत्रमुग्ध करती है। समय की वास्तविकता को उजागर करने वाला साहित्य गुणात्मक होता है तथा सदैव प्रासंगिक रहता है। जन

मानस को प्रकाश प्रदान करते हुए भविष्य में दिशा निर्देश भी देता है। आधुनिक काल में विमर्शवादी अवधारणा के अन्तर्गत उत्तर आधुनिक विमर्श, झुग्गी झोंपड़ी विमर्श, विखण्डन एवं विघटन विमर्श स्त्री विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, सत्त विमर्श, शिक्षा विमर्श सेक्स विमर्श, श्रमिक विमर्श, बाजार विमर्श, दलित विमर्श आदि का समकालीन उपन्यासों में विवेचन विश्लेषण किया गया है।

स्त्री को अपने अस्तित्व के बोध में विमर्श को प्रेरणा प्रदान की है। हिन्दी साहित्य में महिला कथाकारों की एक सशक्त पीढ़ी है जिन्होंने अपने रचना संसार को विविध विमर्श मूलक विचारों से शृगांरित एवं सुसज्जित किया है। उपन्यास साहित्य के सन्दर्भ में महिला लेखकों में मैत्रेयी पुष्पा का योगदान अविस्मरणीय है। इन्होंने ऐसे यथार्थ को जो अनुदघाटित था को उद्घाटित करके पाठकों के समक्ष रखा है। मैत्रेयी जी ने जीवन की उन समस्याओं को रेखांकित किया है जो गहन वास्तविकता के साथ भावनाओं के सहज उच्छलन, मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का शमन करके संवेदनात्मक धरातल का संस्पर्श करती है। मैत्रेयी जी एक स्त्री कथाकार है किन्तु उनके विमर्शवादी अवधारणा के अन्तर्गत स्त्री विमर्श के अतिरिक्त बाल विमर्श, विखण्डन विमर्श, शिक्षा विमर्श तथा सेक्स विमर्श का चिन्तन अपने उपन्यास 'चाक' में किया है।

आत्मनिर्भता की हिमायत स्त्री विमर्श का एक अभिन्न अंग है। स्त्रि का जितना शोषण आत्मनिर्भता के अभाव में हुआ है। उतना शायद उसके आत्म निर्भर होने पर नहीं होता। स्त्री विमर्श वास्तव में आत्म–चेतना, आत्म सम्मान, आत्म गौरव, समता व समानाधिकार की पहल का नाम है। स्त्री विमर्श स्त्री की अस्मिता का, आत्म चेतना का, अन्याय के विरोध का, अस्तित्व बोध का और उसकी अत्याचार के विरोध में खड़े रहने का लड़ाकू वृत्ति का न केवल परिचय देता है अपितु स्त्री चिन्तन को बल प्रदान करता है। वर्तमान नारी आर्थिक रूप से स्वयंपूर्ण बनती जा रही है। आत्मगौरव, अस्तित्व बोध, आत्मा चेतना, आत्म निर्भरता ने नारी को आत्मविश्वस्त व सशक्त बना दिया है।(4) 'स्व' के प्रति सजगता व अस्तित्व की चेतना स्त्री विमर्श की मुख्य शक्ति है जो हिन्दी उपन्यासों में पर्याप्त मात्रा में लक्षित होती है।

स्त्री कथाकारों ने अपने अनुभवों, आँखों देखी घटनाओं के माध्यम से रूढ़िवादिता तथा दमन करने वाली सामाजिक व्यवस्था पर चोट की है। मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' भी नारी चेतना के विकास की गाथा है। वर्तमान समय में नारी विमर्श की जड़े फैलती जा रही है। जब भावना की अपेक्षा बुद्धि की कसौटी पर, विषमता की अपेक्षा समता की कसौटी पर, परंपरा की अपेक्ष आधुनिकता की कसौटी पर, संस्कृति की अपेक्षा कार्य शक्ति की कसौटी पर और लिंगात्मक की अपेक्षा गुणात्मक कसौटी पर व्यक्ति के मूल्यांकन का सूत्रपात होगा तब स्त्री चेतना अधिक उग्र रूप धारण करेगी। ''उभरती हुई नारी चेतना को आज भी समाज सांप के फन की तरह देखता है तथा उसे कुचलने के लिये लाठी का सहारा लिया जाता है। स्त्री की अस्मिता से समाज परेशान हुए बिना नही रह सकता। समाज में सचेतन नारी के प्रति आज भी दकियानूसी दृष्टि रही है। फिर भी नारी अपने दमखम के साथ निर्णय पर अटकी रही है।''(5) यही बात 'चाक' में प्रखर रूप से उभर कर सामने आती है। इसी प्रकार की नारी चेतना को जागृत करने की गाथा उस गाँव अतरपुर की है जहाँ औरतें पुरूषीय अंह, शील और सतीत्व की रक्षा के नाम पर बलि चढ़ा दी जाती हैं। रुकमिणी रस्सी के फंदे से झूल जाती है। रामदेई कुएँ में कूद जाती है। नारायणी करबन नदी में समाधि लेती है। चंदना ससुराल के रास्ते में ही पति के द्वारा मौत के घाट उतार दी जाती है। रानी मंझा को देश निकाला और मृत्युदण्ड एक साथ मिलते हैं। हर हालात में पुरुष की जात बस अपनी ही सगी होती है।

ऐसे इतिहास वाले गांव में करमवीर की ब्याहता, साधजी और हुकुमकौर की बहु, डोरिया और थानसिंह जैसे बलिष्ठ जेठों की भाभी, गुलाब सी रंगत और संगमरमर की तराशी देह वाली रेशम भरी जवानी में पति की मौत के पांच महीने बाद गर्भ धारण करके दिलेरी से उसका ऐलान करती अपने प्रथम विद्रोह का परिचय देती है। रीति–रिवाजों ने, शास्त्र–पुराणों ने, घर–गांव ने उसे मात्र विधवा मान लिया, औरत नहीं। कोई सोच न सका कि वह न तो पत्थर की देवी है और न लोगों का सत्यानास करने वाली राक्षसी। वह हाड़–मांस की बनी औरत है। सास हुकुम कौर से कहती है– ''अम्मा, तुम तो बिरथा ही दांत किटकिटा रही है। तुम्हारे पूत की चिता ठण्डी हो जाने से क्या मेरी देह की आग बुझ जाती। जीतों–मरतों का भेद भी भूल गई तुम। बेटे के संग मैं भी मरी मान ली। मेरे चाल–चलन की झण्डी फहराना जरूरी है? बिरथा ही छानबीन करने में लगी हो। आज वो तुम्हारा बेटा मेरी जगह होता तो पूछती कि तू किसके संग सोया था? अब उसकी बांह गह ले। मेरे मरे पीछे तेरहवीं तक का सब्र न करता और ले आता दूसरी। तुम खुश हो रही होती कि पूत की उजड़ी जिंदगी बस गई। पर फजीता करने पर तुली हो।''(6)

किन्तु रेशम का यह विद्रोह कुकर्मों की संज्ञा पाता है। एक पिछड़े देश के पिछड़े जिले के पिछड़े गांव की अति सजग औरत को कौन जीने देता है। जेठ डोरिया उसकी हत्या कर देता है। रेशम अपने सारे विद्रोह के साथ भूमि समाधि लेती है। यह नैतिकता की वेदी पर असतियों की बलि है। उसकी बहन सारंग पुरूष और औरत के लिए बने अलग–अलग नैतिक मानों को अस्वीकारती, हत्या के कानूनी अपराध को चुनौती देने के बावजूद नितान्त एवं कुंठित स्थिति में दिखाई देती है।

चाक एक 'ओपेन उपन्यास है। इसका अंत खुला है और सम्भावनाएं सच्चे मानव की उम्मीदों का स्पर्श करती हैं। चाक की कथा में से हमारे समक्ष बार–बार उभरकर आता है सारंग का चरित्र। यातपाएं और उनसे मुक्त होने की चेष्टाएँ। चाक की नायिका ने वेदना और आँसू का आलाप छोड़ संघर्ष की भूमि अपनाई है। नायिका ने वेदना और आंसू का आलाप छोड़ संघर्ष की भूमि अपनाई है। नायिका सारंग उस गांव की बहू है जहां के बड़े–बूड़े, प्रधान–नम्बरदार, सेठ–पंडित, ऊंची–नीची जातियों के तमाम पुरुष–महापुरुष न्याय के सरंक्षक न होकर अन्याय के समक्ष गूंगे, तमाशबीन दिखाई देते है। औरतें छल से मारी जाती हैं। ऐसे ही छल से सारंग की फूफेरी बहन रेशम मार दी गई। सारंग ने पति के बल पर प्रण किया कि जब हत्यारे को हथकडी नही लग जाती, अपने बाल नही समेटूगी और हथकड़ी लगवाकर ही रही।

नारी अस्मिता की प्रतिबिम्ब सारंग लगातार आग पर चल रही है और जो आग पर चलना सीख लेता कुन्दन हो जाता है।उसके मन पर पुरुषीय अत्याचारों के अनेक बिम्ब खुदे हैं। बहुविवाह करने वाले अनाचारी पिता और वैसे ही भ्रष्ट संरक्षक बेटियों को गुरुकुल की कैद में डालते हैं। यहां भी मणि अथवा शास्त्रीजी को नहीं शारदा और शकुन्तला को समान गलती पर जीवनघाती कष्ट झेलने पड़ते हैं। अजीब नैतिकता है,'' मर्द औरत को छुता है तो असका उद्धार कर देता है और मर्द को छुए तो उसे पाताल में डुबो देता है।''(7) पौराणिक धारणा है कि श्रीकृष्ण ने गोपियों के संग नही, वेद की ऋचाओं के संग जलक्रीड़ा की थी। गोपियों हथिनियां बनी, भगवान को जलक्रीड़ा कराई और मोहन–मुरारी को छूकर पवित्र हुई। गुलकन्दी और हरिप्यारी को ज़िन्दा जला देने का दर्द कोई भूलने की बात नहीं। मनोहर की बहू को जिस तरह मिर्चों के धुएं पर औंधाया जाता है। इस गांव में किसी मर्द के साथ तो ऐसा कभी नही हुआ। प्रश्न दहशत के बदरंग छोड़ते उसे चैन नही

लेने देते। पति रणजीत बार–बार बेटे को उससे छीनता है। वह जानती है कि गद्दारी, पाप और अधर्म की सजा औरतों को अवसर ढूंढ़–ढूंढ़कर दी जाती है। विधवा पांचमी बीवी का प्रेम प्रसंग जानकर असका अपना ही पिता भंगिन से असका वक्ष पोहे–पशु सा गर्म लोहे से दगवा देता है। लौंगसिरी बीवी का पति रखैल–वेश्या रख लेता है। कलावती चाची का पति घर से भाग पत्नी को जीवन–संघर्ष के लिए अकेले छोड़ देता है। थानसिंह 40 वर्षीय भाई के लिए 15 वर्षीय बैकुंठी खरीदता है और राममूर्ति को बदनाम करने के लिए भूरा गली में असका हाथ पकड़ लेता है।

सारंग जाटिनी है। गुरुकुल से पढ़ी है। लोहे की बनी है। हिम्मत और साहस की मालिकन है। असके आंगन में सावन तपता है। रंजिश को वह रबड़ की तरह खींच लेती है। अपने जीवन– रथ की स्वयं सारथी है। यह जानकार भी कि पुरुषों की दुनिया में हस्तक्षेप करना आग की धार पर चलना है, उनकी बराबरी की कामना करना खतरे की घण्टी बजाना है–वह हिम्मत नही हारती।

गुरुकुल में वह शारदा और शकुन्तला पर हुए अन्याय के प्रति विद्रोह करती है। रेशम और असके अजन्मे बच्चे के हत्यारे, 'प्रथम' (बछड़ा) को मौत की नींद सुलाने वाले, सारंग का अपमान करने वाले, चंदन को उसकी बांहों से झटक लेने वाले डोरिया को वह कुश्ती के बहाने कैलासी सिंह से पिटवाकर ही चैन पाती है। पत्नी को प्रताड़ित एवं पीड़ित करने के लिए बेटे को बनवास देने वाले और मास्टर श्रीधर की जमकर पिटाई करने वाले पति के प्रति विद्रोह में मानो श्रीधर से उसके सम्बन्ध स्थापित हो जाते हैं। गुरुकुल में पढ़ने वाली, व्रत–उपवास रखने वाली, बेटे के लिए जार–जार रोने वाली, खेतों में काम करने वाली, सहज संकोची, घरेलू सारंग श्रीधर से संबंध जोड़ ले? यह एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है। किशोरावस्था के प्रथम उद्दाम आवेग में वह गुरुकुल के शास्त्रीजी के पास भी एक बार गई थी, किन्तु उनकी शारीरिक कामुकता की अश्लील अभिव्यक्ति के कारण उसका मन विर्दोह कर उठा था। सारंग रूपसी है। डॉ. शुकदेव सिंह के शब्दों में, ''सारंग में ऐसा मलूक बहु अर्थात द्रौपदीतत्व है कि सारंग से छः साल छोटा देवर उसकी सूरत निहारता रहता है। भव्य शालीनता और अति सदाचारी सादगी में रहते हुए मैत्रेयी पुष्पा देह के सच और सच के शृंगार को रचने में न कोई धोखा खाना चाहती है, न धोखा देना चाहती है।''(8) पति के स्थान पर चुनाव का पर्चा भरने के कारण सारंग पर परम्परित दाम्पत्य, सात फेरों वाली संस्कृति एवं स्त्री धर्म को अस्वीकारने का प्रश्नचिह्न लगाया जा सकता है। श्रीधर के साथ उसके सम्बन्धों को औचित्य ''धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र'' की मान्यता पर दे भी दे तो भी सनातन नैतिकता इसे पापकथा ही कहती है। वह न अबोध है, न विधवा, न कुंवारी अल्हड़ और न जवानी की मारी। फिर भी वह श्रीधर की राधा रानी बनी डोलती है। मीरांबाई की तरह घरबाहर त्यागती है गांववालों के लिए वह रंडी, छिनार से भी बढ़कर है। पति की निगाहों में वह बेशर्म, गद्दार, बदकार और पति द्रोहिणी है। अनामिका सारंग की मनःस्थिति का विश्लेषण करती लिखती है, ''नायिका सारंग प्रायःउतनी ही अगाधमना है जितनी डोरोथियाब्रूम्स। उसकी त्रासदी उन स्त्रियों की त्रासदी है जो अपनी जरूरत से भी ज्यादा पारदर्शी, पर उग्र पतियों से स्नेह तो करती है, पर लाख चाहकर भी उन्हें अपने सपनों के पूर्ण पुरुष का दर्जा नही दे पाती। अपने कलेजे में टूटकर प्यार करने का जोर नहीं जुटा पाती।''(9)

पति पुरुष के विषय में मैत्रेयी पुष्पा के विचार बड़े स्पष्ट हैं, ''जिसने युग–युगान्तर से आज तक पत्नी की अग्निपरीक्षा लेने की जिम्मेदारी निभाई है या जिसको गृहनिष्कासन का जन्मसिद्ध अधिकार हासिल है–जमाना बदल गया है पुरुष नहीं बदले स्वयंभुवों की यात्राएं स्थगित करे, ऐसी किसकी हिम्मत है ये भावनाएं, इच्छाएं, आकांक्षाएं और स्त्री की हैं, जो श्लील–अश्लील, नैतिक–अनैतिक और पाप–पुण्य की परिभाषा भूल रही हो। उस दासी की है जो गुलाम रहते–रहते बेजार हो गई है। मनुष्य के रूप में जीना कैसा होता है मनुष्य होने के नाते जानना चाहती है। पढ़े–लिखे और सभ्य लोग उसकी बात पर गौर करें, यही निवेदन है।''(10) सारंग जिद्दी, हठी, अपनी बात पर अड़ जाने वाली खुदमुख्तार औरत है। पति को फतेहसिंह प्रधान की चालों से वह जब सचेत करती है।

सारंग का विद्रोह यौन–नैतिकता के दोगले मानदण्डों के विरुद्ध, ग्रामिण द्वेषों के विरुद्ध है। पति द्वारा मिलने वाला अपमान और वात्सल्य की छीना–झपटी उसे और भी विद्रोही कर देते हैं। सारंग की विडम्बना यह है कि अकेली औरत किसी विधान को तोड़ नही सकती। तोड़े तो अपराधिनी मान ली जाती है। आज के नैतिक मूल्यों की पड़ताल सारंग, रेशम, गुलकंदी, लौगसिरी बीबी, कलावती चाची, राममूर्ति, बैकुंठी की दसों अंगुलियो से फिसलती जा रही है। अश्लीलता और अपसंस्कृति के आरोप से वे कैसे मुक्ति पाए।

सारंग उस जाति की है जहां यारई और वैर उठाईगीरों की तरह नहीं निभाए जाते, ये तो ताजिंदगी चलने वाली चीजें है। अतरपुर गांव युद्धभूमि से भी भयंकर है। बड़े लोगों के लिए कोर्ट–कचहरी कुछ नहीं। कानून–कायदे पैसा देकर कागज के ऊपर से पोंछ देने वाली इबारत भर है। गांव में कायरता और गुंडई का बोलबाला है। मास्टर श्रीधर को पीटा जाता है। रंजीत पर भूरा द्वारा हमला करवाया जाता है। पन्ना सिंह पर सुलेमान हमला करता है। गुलकंदी, हरिप्यारी और बसु देवा को जिंदा जला दिया जाता है। फतेहसिंह हो या साधजी–सब बंदगोभी के फूल हैं। तोता की बहू रेशम के पक्ष में गवाही नहीं देती तो उसका घर पक्का बन जाता है। सूंसा तेली को हरपरसाद को पकड़वाने के दस हजार रुपये मिलते हैं। जेल जाना यहां सम्मानसूचक माना गया है।

इस गांव में जाति–पांति का बोलबाला है तथा नारी को ही प्रताड़ना सहन करनी पढती है। नाइन गुलकंदी बिसुनदेवा के साथ भाग जाती है, इसलिए हरपरसाद की बहन से शादी के लिए कोई हां नहीं करता। नेंकसे मास्टर खटीक है। बच्चे भी छेड़ते हैं–''नेंकसे खटीक, तूने दर–दर मांगी भीख, फिर भी देता हमको सीख।'' कुम्हार श्रीधर के पांव छूने के कारण जाटिनी सारंग की पूरे गांव में बदनामी होती है। गुलकंदी और बिसुनदेव का जीवन जाति–पांति के कारण बलि चढ़ता है।

उपन्यास में रंजित के बाबा गजाधर सिंह,रिटायर्ड फौजी, अतीत के अभिप्रायों और विवरणों के साथ–साथ एक सच्चे सीधे पुरुष के रूप में आए हैं। वे अपने भ्रष्ट पुलसिए बेटे दलबीर को उसके झूठ, रिश्वतखोरी, परस्त्रीगमन तथा व्यभिचार के कारण भरी बिरादरी में लताड़ देते है। डोरिया द्वारा सारंग का अपमान होने पर साधजी के यहां बंदूक लेकर पहुंच जाते हैं, ''हम भीष्म पितामह नहीं कि द्रौपदी को भरी सभा में नंगी होता देख लें। वे देवता थे देख लेते होंगे। हम देवता नहीं।''(11) गजाधर के पास अग्निबाणों का ब्योरेवार सिलसिला है। सारंग जब लौंगसिरी बीबी के यहां मास्टर के रात बिताकर आती है तो गजाधर स्पष्ट कहते हैं, '' तू श्रीधर के साथ घात न करता रंजित तो सारंग उसका उचक्कापन करेगा तो कौन सी औरत गले लगा लेगी।''(12)

सारंग में अन्तर्नर की स्थिति मिलती है। रंजित कहते हैं औरतों जैसा आचरण करो। अपनी सीमाएं देखो–गहने कपड़े मांगो। पर सारंग कभी रेशम, गुलकंदी,शारदा, शकुन्तला का बदला लेने की सोचती है और कभी पति के स्थान पर चुनाव का पर्चा भर आती है। चुनाव

के दिनों में सारंग को गुलकन्दी की हत्या की पीड़ा दिवास्वप्नों में दिखाई देती है। बेटे के दलबीर के यहां चले जाने पर उसे वह स्वप्न में माँ के लिए तड़पता मिलता है। ये स्थितियां नारी चेतना का मूल और परिणाम घोषित करती हैं। ''चाक की औरतें पुरुष समाज पर भारी पड़ रही हैं। कही देह ताप के कारण कहीं पुरुष–नारी के लिए बने अलग–अलग मानदण्डों के कारण और कहीं अपने बौद्धिक विकास के कारण। ये औरतें उन गोरी मेमों से भी आगे हैं, जो रास–रंग, नाच–गान का साथ तो देती थीं, पर वायसराय या शासक कभी नहीं बनीं। चाक की सारंग चुनाव जीतकर अपना अस्तित्व और विद्रोह मात्र सार्थक करने का संकल्प लिए हैं।(13)''

'चाक' उपन्यास का प्रारम्भ जिस कथा से शुरू हुआ था वह कथा निश्चित ही स्त्री विमर्श की महनीयता की कथा थी। वहां एक स्त्री की हत्या के विरोध में दूसरी स्त्री तनकर खडी थी। यहो रेश्म और सारंग नहीं थी, दोनों बहनों का रिश्ता ही नहीं था बल्कि एक स्त्री का दूसरी स्त्री के प्रति आत्मीय संबंध था जो हत्या का बदला लेने के लिए तैयार करता है। सारंग जिस प्रकार गुस्से में है,वह देखने लायक है।''14

संदर्भ सुचीः–

1. 'विमर्श के विविध आयाम' डॉ अर्जुन चव्हाण. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम प्रकाशन–2008 पृ. 18,19,29
2. हिन्दी पर्यायवाची कोश, डॉ. भोलानाथ तिवारी,प्रभात प्रकाशन,दिल्ली,संस्करण 1999
3.समकालीन हिन्दी उपन्यास,डॉ0 सूरज पालीवाल, हीरयाणा साहित्य अकादमी,पंचकूला,प्रथम संस्करण–2004 पृ0 132
4.महिला उपन्यास(21वीं शती की पूर्व संध्या के संदर्भ में) डॉ. मधु सन्धु, निर्मल प्रकाश्न दिल्ली–110094 प्रथम संस्करण–2000 पृ. 119
5.'चाक' मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन ,नईदिल्ली,1997 पृ. 19,100,331,48
6. मैत्रेयी पुष्पा के'चाक' में विर्मशवादी मीमांसा की संकल्पना,डॉ किरण ग्रोवर,International Journal of Multidisciplinary Research and Development पृ. 30
7. स्मृतियां जगने लगीं,स्त्री का चहरा बदलने लगा, मैत्रेयी पुष्पा, हंस,जनवरी,1999 पृ.115

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org